International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 07 | July - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

गोखले और गांधी: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बैचारिकी के दो ध्रुव का समन्वय

काजल कुमारी
शोध छात्रा
पंजीयन संख्या : 591/2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अनेक विचारधाराओं, प्रवृत्तियों और रणनीतियों का संगम था। इस संग्राम में दो प्रमुख वैचारिक धाराएँ विशेष रूप से उभरकर सामने आती हैं—गोपाल कृष्ण गोखले का *सुधारवादी दृष्टिकोण* और महात्मा गांधी का *सत्याग्रही दृष्टिकोण*। यद्यपि दोनों नेताओं का अंतिम उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता था, किन्तु दोनों की रणनीति, साधन और दृष्टिकोण भिन्न थे। यह शोध आलेख इन दोनों विचारधाराओं की तुलनात्मक विवेचना करता है और उनके प्रभावों की ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित करता है।

गोपाल कृष्ण गोखले एक उदारवादी नेता थे, जिन्होंने संवैधानिक सुधार, विधायी परिषदों में भागीदारी, ब्रिटिश सरकार से संवाद और शांतिपूर्ण उपायों के माध्यम से राजनीतिक सुधारों की वकालत की। उन्होंने सामाजिक सुधार, शिक्षा और आर्थिक न्याय को प्राथमिकता दी और भारतीय समाज को दीर्घकालिक परिवर्तन के लिए तैयार करने पर बल दिया। उनकी रणनीति मुख्यतः शिक्षित मध्यवर्ग और संस्थागत सुधारों के इर्द-गिर्द केंद्रित थी। वहीं महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जनता का आंदोलन बनाया। उनका मार्ग सत्याग्रह, अहिंसा, असहयोग और सविनय अवज्ञा पर आधारित था। उन्होंने नैतिक बल और आत्मबल को राजनीतिक संघर्ष का केंद्र बनाया और स्वराज की तत्कालिक माँग के साथ जनजागरण, ग्रामीण आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता को भी आंदोलन का अंग बनाया। गांधी ने ब्रिटिश सत्ता की नैतिक वैधता को ही नकार दिया और उसे जनबल से चुनौती दी। यद्यपि दोनों नेताओं के दृष्टिकोणों में स्पष्ट अंतर था—एक ओर विधायी सुधार और व्यवहारवाद, तो दूसरी ओर जनसंघर्ष और नैतिक आध्यात्मिकता—फिर भी उनके बीच गहरा परस्पर सम्मान और संवाद बना रहा। गांधी ने गोखले को अपना *राजनीतिक गुरु* कहा और उनके सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रेरणा ली।

इस शोध आलेख में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि सुधारवाद और सत्याग्रह को विरोध नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। गोखले ने जहां राजनीतिक चेतना और संस्थागत सोच की नींव रखी, वहीं गांधी ने उस चेतना को व्यापक जनांदोलन और नैतिक बल से सशक्त किया। गोखले और गांधी की विचारधाराएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दो ऐतिहासिक धाराएँ हैं, जिन्होंने एक साथ मिलकर भारत के राजनीतिक भविष्य की दिशा निर्धारित की। इन दोनों की युगानुकूल भूमिका ने न केवल स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक, नैतिक और विवेकशील चरित्र की भी आधारशिला रखी।

मूल शब्द (Keywords) : सुधारवाद , सत्याग्रह, उदारवाद, असहयोग,समाजसुधार,अहिंसा,स्वराज, जनआंदोलन, राजनीतिक गुरु, नैतिक बल, विधायी परिषद, सत्याग्रह , संस्थागत राजनीति, सामाजिक सुधार , स्वतंत्रता संग्राम

साहित्य समीक्षा

कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों और ग्रंथों की साहित्य समीक्षा गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के राजनीतिक और वैचारिक योगदान की विस्तृत समझ प्रस्तुत करती है। **एस.के. शर्मा** की *Political Thought of Gopal Krishna Gokhale* गोखले के उदारवादी दृष्टिकोण, सुधारवादी राजनीति और आर्थिक विचारों की गहन पड़ताल करती है। वहीं, **बी.आर. नंदा** की पुस्तक *Indian Moderates and British Raj* गोखले की भूमिका को औपनिवेशिक भारत में एक संयमित

और समझौतावादी नेता के रूप में उभारती है। **सब्यसाची भट्टाचार्य** द्वारा लिखित *गोपाल कृष्ण गोखले: एक जीवनी* उनके व्यक्तिगत जीवन, विचारधारा और सामाजिक सुधारों को मानवीय दृष्टिकोण से विश्लेषित करती है। इसके समानांतर **गांधी जी** की आत्मकथा *सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी* गोखले के गांधी पर पड़े प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप में दर्शाती है, जिससे दोनों के मध्य वैचारिक संबंध स्पष्ट होते हैं। **जूडिथ एम. ब्राउन** की *Gandhi: Prisoner of Hope* और **एंथनी जे. परेल** की *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony* गांधी के जीवन दर्शन, नैतिक राजनीति और सामाजिक समरसता की अवधारणा को विस्तार से प्रस्तुत करती हैं। **रामचंद्र गुहा** की *Gandhi Before India* गांधी के दक्षिण अफ्रीका काल और गोखले के मार्गदर्शन को गांधी के जीवन की एक निर्णायक धारा के रूप में रेखांकित करती है। **रवींद्र कुमार** की *Gandhi and His Critics* गांधी की आलोचनाओं को तर्कसंगत रूप में लेकर उनके विचारों की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करती है।

इन सभी पुस्तकों के माध्यम से गोखले और गांधी के बीच वैचारिक निरंतरता और उनके योगदान की ऐतिहासिक भूमिका उजागर होती है।

शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना :

इस शोध आलेख का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी की वैचारिक भूमिकाओं, उनके दृष्टिकोणों की भिन्नता और समन्वय को स्पष्ट करना है। गोखले का उदारवादी, संवैधानिक सुधारों पर आधारित दृष्टिकोण और गांधी का नैतिक, सत्याग्रही और जनसंपृक्त नेतृत्व — दोनों भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में दो विभिन्न लेकिन पूरक ध्रुवों के रूप में कार्य करते हैं। यह शोध यह भी विश्लेषण करता है कि गांधी ने गोखले को अपना राजनीतिक गुरु क्यों माना और उनके विचारों से कैसे प्रेरणा ली, साथ ही यह भी कि कहां-कहां उन्होंने उनसे वैचारिक दूरी बनाई।

परिकल्पना यह है कि यद्यपि गोखले और गांधी की रणनीतियाँ भिन्न थीं, किंतु उनके मूलभूत मूल्य — जैसे सामाजिक न्याय, नैतिकता, और भारतीयता की खोज — स्वतंत्रता संग्राम को एक वैचारिक आधार प्रदान करने में एकीकृत रूप से योगदान करते हैं।

अनुसंधान पद्धति एवं डाटाबेस :

यह शोध ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसके अंतर्गत प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के भाषणों, लेखों, आत्मकथात्मक विवरणों तथा समकालीन पत्र-पत्रिकाओं को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया है। वहीं द्वितीयक स्रोतों में विद्वानों द्वारा लिखित जीवनी, आलोचनात्मक अध्ययन, शोध लेख और ऐतिहासिक संदर्भ ग्रंथों को शामिल किया गया है ।

डाटाबेस के रूप में 'सत्य के प्रयोग', 'गांधी बिफोर इंडिया', 'गोखले की जीवनी', ऑक्सफोर्ड, येल, और नवजीवन प्रकाशन की पुस्तकों के साथ-साथ राष्ट्रीय अभिलेखागार, गांधी स्मृति, और लोकसभा सचिवालय के दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। यह कार्य तुलनात्मक दृष्टिकोण से गोखले और गांधी की वैचारिक समानताओं और भिन्नताओं की सम्यक व्याख्या करता है।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक बहुआयामी प्रक्रिया थी, जिसमें विभिन्न विचारधाराओं, रणनीतियों और नेतृत्व शैलियों ने अपनी भूमिका निभाई। इस संघर्ष के केंद्र में दो महान विचारक—गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी—ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरे, जिन्होंने न केवल आंदोलन की दिशा तय की बल्कि भारत के भविष्य की वैचारिक नींव भी रखी। इन दोनों नेताओं के विचार और कार्यशैली स्वतंत्रता आंदोलन के दो प्रमुख धाराओं के रूप में सामने आए— *सुधारवाद* और *सत्याग्रह* । गोपाल कृष्ण गोखले, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख उदारवादी नेता थे, जिनका विश्वास था कि भारत की स्वतंत्रता संवैधानिक सुधारों, शांतिपूर्ण संवाद और प्रशासनिक उत्तरदायित्व की प्रक्रिया से ही प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने शिक्षा,

सामाजिक सुधार और प्रशासनिक जागरूकता को राजनीतिक परिवर्तन का मूल आधार माना। उनका दृष्टिकोण व्यवहारवादी था, जिसमें तात्कालिक संघर्ष की अपेक्षा क्रमिक विकास को प्राथमिकता दी गई। इसके विपरीत, महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को जनता के हाथों में सौंपा। उनका सत्याग्रह आधारित दृष्टिकोण अहिंसा, नैतिक बल और आत्मबल पर आधारित था। उन्होंने जनआंदोलनों, असहयोग और सविनय अवज्ञा जैसे माध्यमों से ब्रिटिश शासन को चुनौती दी और स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और आत्मिक लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि गोखले और गांधी के मार्ग अलग थे, परंतु उनके उद्देश्य समान थे—भारत की स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण। गांधी स्वयं गोखले को अपना "राजनीतिक गुरु" मानते थे और गोखले के सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर ही उन्होंने अपने कार्य का प्रारंभ किया।

यह शोध आलेख गोखले और गांधी के विचारों की तुलनात्मक विवेचना करता है, उनके दृष्टिकोणों की ऐतिहासिक भूमिका को उजागर करता है और यह विश्लेषण प्रस्तुत करता है कि कैसे इन दोनों धाराओं ने मिलकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नैतिक, वैचारिक और जनोन्मुख आंदोलन में रूपांतरित किया।

गोपालकृष्ण गोखले और गांधी का जीवन और विचार

गोपाल कृष्ण गोखले (1866–1915) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक काल के प्रमुख उदारवादी नेता थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख स्तंभों में से एक रहे और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता, तर्क और संवैधानिकता के पक्षधर थे। गोखले का विश्वास था कि भारत की स्वतंत्रता और उन्नति क्रमिक सुधारों और ब्रिटिश प्रशासन से संवाद के माध्यम से ही संभव है। उनका दृष्टिकोण टकराव की बजाय सहयोग का था, जिसमें वे भारतीयों को प्रशासन में भागीदारी का अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत रहे। गोखले ने विधायी सुधारों के माध्यम से प्रशासनिक जिम्मेदारी की मांग की और 'इंडियन सर्विस रूल्स' में बदलाव के पक्षधर थे।[1] उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारतीयों को शिक्षित कर, उन्हें प्रशासनिक और राजनीतिक उत्तरदायित्व के लिए तैयार करना चाहिए। उन्होंने सुधारवाद की उस परंपरा को आगे बढ़ाया जिसमें सुधारों के ज़रिए स्वतंत्रता की भूमि तैयार की जाती है। गोखले शिक्षा को सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक चेतना का मूल आधार मानते थे। उन्होंने 1905 में 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था समाजसेवा, शिक्षा और राजनीतिक प्रशिक्षण।[2] वे आर्थिक न्याय के पक्षधर थे और ब्रिटिश शासन के खर्चीले प्रशासन, असंतुलित कर प्रणाली और विदेशी व्यापार की शोषणकारी नीतियों के आलोचक थे। उनका जीवन और विचार भारतीय राष्ट्रवाद के उस चरण को दर्शाते हैं जिसमें तर्क, विवेक और सुधार को प्राथमिकता दी गई।

महात्मा गांधी (1869–1948) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रभावशाली और क्रांतिकारी नेताओं में से एक थे, जिन्होंने भारतीय राजनीति को नैतिकता, आत्मबल और जनसंघर्ष के सिद्धांतों से जोड़ दिया। उन्होंने सत्याग्रह, अहिंसा और आत्मशुद्धि को राजनैतिक संघर्ष के केंद्र में स्थापित किया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष से प्राप्त अनुभवों को उन्होंने भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की रणनीति का आधार बनाया। गांधी ने असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930), और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के माध्यम से जनशक्ति को जागृत किया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता कोई संवैधानिक दान नहीं, बल्कि नैतिक अधिकार है, जिसे अहिंसा और सत्य के बल पर अर्जित किया जाना चाहिए। वे ब्रिटिश शासन की नैतिक वैधता को अस्वीकार करते थे और भारतीय जनमानस को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने पर बल देते थे।[3] गांधी का ग्रामीण स्वराज का विचार भारत के आत्मनिर्भर गांवों पर आधारित था, जहां प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक और नैतिक रूप से स्वतंत्र हो। वे चरखा, खादी और स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से स्वावलंबन का संदेश देते रहे। उनका दृष्टिकोण केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक क्रांति का प्रतिनिधित्व करता है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन को जनता का आंदोलन बनाया और इसे एक व्यापक नैतिक आंदोलन के रूप में परिवर्तित किया। उनका जीवन एक प्रयोगशाला था जिसमें उन्होंने सत्य, अहिंसा, तप और आत्मनियंत्रण के सिद्धांतों को न केवल प्रचारित किया बल्कि स्वयं अपने जीवन में जिया। उनके विचार आज भी नैतिक राजनीति और जन-सशक्तिकरण के प्रेरणास्त्रोत हैं।

सुधारवाद बनाम सत्याग्रह: वैचारिक तुलना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दो प्रमुख वैचारिक धाराएँ समानांतर रूप से विकसित हुईं—एक ओर गोपाल कृष्ण गोखले का *सुधारवाद*, और दूसरी ओर महात्मा गांधी का *सत्याग्रह* आधारित आंदोलन। इन दोनों विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया। [4] जहाँ गोखले ने संवैधानिक सुधारों, विधायी प्रक्रियाओं और ब्रिटिश शासन के भीतर संवाद को प्राथमिकता दी, वहीं गांधी ने नैतिक बल, जनांदोलन और असहयोग जैसे संघर्षशील साधनों के माध्यम से स्वतंत्रता की राह अपनाई।

1. विधायी सुधार बनाम जनसंघर्ष

गोखले का विश्वास था कि भारत में राजनीतिक चेतना का विकास शांतिपूर्ण और विधायी ढाँचे के माध्यम से होना चाहिए। वे मानते थे कि ब्रिटिश शासन को यदि संवैधानिक ढंग से चुनौती दी जाए तो वे भारतीयों की मांगों को स्वीकार कर सकते हैं। इस दृष्टिकोण में संसद में सुधार, प्रशासनिक उत्तरदायित्व और नागरिक अधिकारों का क्रमिक विस्तार प्रमुख साधन थे। इसके विपरीत गांधी का विश्वास था कि केवल विधायी सुधारों से स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। उनका मानना था कि एक शोषक सत्ता से संवाद के बजाय उसे नैतिक रूप से अस्वीकार करना आवश्यक है। उन्होंने सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा और जनांदोलन जैसे उपायों को अपनाकर सीधे जनभागीदारी से ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। [5] उनके लिए स्वतंत्रता कोई विनम्र याचना नहीं, बल्कि जनबल का नैतिक अधिकार था।

2. क्रमिक परिवर्तन बनाम तात्कालिक प्रतिरोध

गोखले सुधारों में विश्वास रखते थे, इसलिए उनका दृष्टिकोण क्रमिक और क्रमबद्ध था। वे प्रशासनिक ढांचे में रहते हुए उसमें सुधार के पक्षधर थे। उनका यह भी मानना था कि भारत जैसे बहुसांस्कृतिक और विविध देश में तत्काल क्रांतिकारी परिवर्तन अव्यवस्था ला सकता है, इसीलिए सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के लिए शिक्षा, जनचेतना और राजनीतिक प्रशिक्षण ज़रूरी है। इसके विपरीत, गांधी का विश्वास था कि ब्रिटिश शासन की नैतिक वैधता ही समाप्त कर दी जानी चाहिए। वे इसे अन्यायपूर्ण और शोषणकारी मानते थे, और इसलिए इसके खिलाफ तात्कालिक प्रतिरोध आवश्यक था। गांधी का "सत्याग्रह" केवल राजनीतिक हथियार नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक साधना का रूप था। [6] वे मानते थे कि अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना नैतिक कर्तव्य है, और इसके लिए समय की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती।

3. व्यवहारवाद बनाम नैतिक-आध्यात्मिक दृष्टिकोण

गोखले का दृष्टिकोण व्यवहारवादी था। वे यथार्थ राजनीति को समझते थे और मानते थे कि भारत के राजनीतिक विकास में व्यावहारिकता और तर्कशीलता का समावेश होना चाहिए। उनका सुधारवाद ब्रिटिश सत्ता की मर्यादा में रहकर काम करने की रणनीति थी। वे ब्रिटिश संस्थाओं में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाने के पक्षधर थे और उनके विचारों में राजनीति को एक *प्रशासकीय शुद्धता* और *नीतिगत सुधार* का माध्यम माना गया। वहीं गांधी का दृष्टिकोण नैतिक और आध्यात्मिक था। उन्होंने राजनीति को आत्मा का क्षेत्र माना। उनके लिए सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम न केवल व्यक्तिगत जीवन के मूल्य थे, बल्कि राजनीतिक जीवन के भी अनिवार्य सिद्धांत थे।[7] उन्होंने भारतीय राजनीति को केवल सत्ता का संघर्ष न बनाकर, एक नैतिक साधना में परिवर्तित कर दिया। उनका विश्वास था कि राजनीति तभी शुद्ध हो सकती है जब वह नैतिक और आत्मिक रूप से सशक्त हो।

4. जनसंपर्क और नेतृत्व शैली में अंतर

गोखले का नेतृत्व मुख्यतः शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित था। वे सभाओं, लेखन और संवाद के माध्यम से जनमत तैयार करने का प्रयास करते थे। उनका संपर्क सीमित परंतु गहन था। इसके विपरीत गांधी का नेतृत्व शैली पूरी तरह जनकेंद्रित थी।[8] उन्होंने ग्रामीण भारत को स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनाया और खादी, चरखा, स्वदेशी जैसे प्रतीकों के माध्यम से जनमानस को जोड़ दिया।

5. निष्कर्षात्मकअंतर

इन दोनों विचारों के मूल अंतर उनके दृष्टिकोण, साधनों और समय की कल्पना में थे। गोखले ने संवाद, सुधार और क्रमिक विकास को साध्य माना, जबकि गांधी ने प्रतिरोध, जनसंघर्ष और नैतिक बल को प्राथमिकता दी। फिर भी यह कहना अनुचित होगा कि ये दोनों विचारधाराएँ परस्पर विरोधी थीं। वास्तव में, ये दोनों स्वतंत्रता संग्राम की पूरक धाराएँ थीं—एक ने नींव रखी, दूसरी ने उसे विस्तार और शक्ति दी।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गोखले के सुधारवाद ने राजनीति में विवेक और संयम लाया, जबकि गांधी के सत्याग्रह ने उसे जनशक्ति और नैतिकता से जोड़कर एक महान जनांदोलन में रूपांतरित कर दिया। दोनों की भूमिका ने भारत को स्वतंत्रता के मार्ग पर नैतिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध किया।

गोखले और गांधी के पारस्परिक संबंध

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दो महानायकों—गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी—के संबंध आपसी आदर, संवाद और प्रेरणा पर आधारित थे। यद्यपि दोनों के विचारों में रणनीतिक स्तर पर स्पष्ट भिन्नताएँ थीं, फिर भी उनके मध्य एक गहरा संबंध रहा, जो भारतीय राजनीतिक संस्कृति में वैचारिक विविधता के बीच संवाद की एक प्रेरणादायक मिसाल बनकर उभरा। महात्मा गांधी ने स्वयं स्वीकार किया कि गोखले उनके "राजनीतिक गुरु" थे।[9] 1915 में जब गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, तब वे भारत की राजनीतिक परिस्थितियों को समझने के लिए गोखले से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते थे। गोखले ने गांधी को सलाह दी कि वे भारत लौटने के बाद पहले देश का भ्रमण करें और आमजन के जीवन को समझें, तभी वे प्रभावी रूप से सार्वजनिक जीवन में योगदान दे सकेंगे। गांधी ने इस सलाह को न केवल माना, बल्कि उसे अपने राजनीतिक जीवन की नींव बना लिया। गांधी और गोखले के विचारों में यद्यपि कई मतभेद थे—जैसे कि गोखले का सुधारवादी दृष्टिकोण और गांधी का सत्याग्रही आंदोलन—फिर भी दोनों के बीच संवाद और सम्मान की भावना बनी रही। गांधी ने गोखले के राजनीतिक संयम, तार्किकता और देशभक्ति से प्रेरणा ली। गोखले ने भी गांधी के नैतिक साहस और जनसंपर्क की क्षमता की सराहना की थी, यद्यपि वे गांधी के कुछ संघर्षशील तरीकों को अतिवादी मानते थे। महात्मा गांधी ने गोखले की स्मृति में 'गोखले ट्रस्ट' की स्थापना की और उनके जीवन और कार्यों को सार्वजनिक रूप से स्मरण किया।[10] गांधी के लेखन और वक्तव्यों में गोखले की छवि एक आदर्श, निष्कलंक और राष्ट्रनिष्ठ नेता के रूप में उभरती है। उन्होंने कहा था कि "गोखले जैसा निःस्वार्थ और सच्चा सेवक भारत को फिर कब मिलेगा?" गांधी के प्रारंभिक राजनीतिक दृष्टिकोण में गोखले की उदार नीति और संवैधानिक सुधारों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। बाद में भले ही गांधी ने संघर्ष और सत्याग्रह का मार्ग अपनाया, लेकिन उन्होंने गोखले की मूल भावना—राजनीति में नैतिकता, सार्वजनिक सेवा और समर्पण—को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाए रखा।

इस प्रकार, गोखले और गांधी का संबंध केवल वैचारिक नहीं, बल्कि आत्मिक और प्रेरणात्मक था, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गरिमा और एकता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुधारवाद और सत्याग्रह दो प्रमुख विचारधारात्मक धाराओं के रूप में उभरे। गोपाल कृष्ण गोखले के नेतृत्व में जहाँ सुधारवाद ने विधायी, संवैधानिक और क्रमिक विकास पर बल दिया, वहीं महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह ने प्रतिरोध, नैतिक बल और जनसंघर्ष के माध्यम से स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। प्रायः इन दोनों धाराओं को परस्पर विरोधी के रूप में देखा जाता है, किंतु गहराई से विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि ये दोनों एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर दो पूरक मार्ग थे—भारतीय स्वराज की प्राप्ति। गोखले का सुधारवादी दृष्टिकोण अंग्रेजी शासन के भीतर रहकर शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक सुधारों के माध्यम से भारत की स्वशासन की दिशा में प्रगति का पक्षधर था। उनका विश्वास था कि भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता से पहले राजनीतिक शिक्षा और सामाजिक तैयारी की आवश्यकता है। वे विधायी संस्थाओं, प्रशासनिक सुधारों और शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र को परिपक्व बनाना चाहते थे। यह दृष्टिकोण देश में उदार राष्ट्रवाद की नींव रखने वाला सिद्ध हुआ। दूसरी ओर, गांधी का सत्याग्रह आधारित दृष्टिकोण तत्कालिक नैतिक और राजनीतिक प्रतिरोध की मांग करता था। गांधी ने सत्य, अहिंसा और आत्मबल को राजनीतिक साधनों में बदलकर स्वतंत्रता संग्राम को एक नैतिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने जनसाधारण को संघर्ष में सहभागी बनाकर राजनीति को

लोकतांत्रिक और जनोन्मुखी बनाया। स्वतंत्रता संग्राम की सफलता इन दोनों दृष्टिकोणों के समन्वय में ही निहित थी। यदि गोखले जैसे नेताओं ने राजनीतिक चेतना, नीति और संस्थागत आधार तैयार न किया होता, तो गांधी को व्यापक जनसमर्थन और संगठन का आधार प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार यदि गांधी जनमानस को आंदोलित कर जनबल को संगठित न करते, तो गोखले की संवैधानिक माँगें केवल कागज़ी ही रह जातीं। भारत के लोकतांत्रिक विकास में भी इन दोनों धाराओं की ऐतिहासिक भूमिका रही है। गोखले की परंपरा ने संविधान, विधायिका, और नीति-निर्माण की नींव डाली, जबकि गांधी की परंपरा ने नागरिक अधिकारों, सामाजिक न्याय और नैतिक राजनीति की भावना को जनतंत्र की आत्मा बनाया। स्वतंत्र भारत में इन दोनों दृष्टिकोणों का समन्वय लोकतांत्रिक संरचना और नागरिक चेतना के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ। इसलिए, सुधारवाद और सत्याग्रह को विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक धाराएँ मानना उचित होगा। एक ने राजनीतिक परिपक्वता की आधारशिला रखी, तो दूसरे ने उसे जनबल से सशक्त बनाया। दोनों की संयुक्त भूमिका ने ही भारत को स्वतंत्रता दिलाई और लोकतांत्रिक भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया।

संदर्भ सूची (References)

1. Sharma, S.K. *Political Thought of Gopal Krishna Gokhale*. Deep & Deep Publications, 2005. pp. 88
2. ब्राउन, जूडिथ एम. *गांधी: प्रिजनर ऑफ होप*, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989, पृ. 45
3. वही
4. Parel, Anthony J. *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony*. Cambridge University Press, 2006. pp. 74
5. गुहा, रामचंद्र. *गांधी बिफोर इंडिया*, पेंगुइन बुक्स, 2013, पृ. 211
6. वही
7. Ravindra Kumar. *Gandhi and His Critics*. Allied Publishers, 1990. pp. 64
8. नंदा, बी.आर. *गोपाल कृष्ण गोखले: इंडियन मॉडरेट्स एंड ब्रिटिश राज*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977, पृ. 203
9. गांधी, एम.के. *सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी*, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, 1927, पृ. 156
10. भट्टाचार्य, सब्यसाची. *गोपाल कृष्ण गोखले: एक जीवनी*, रूपा पब्लिकेशंस, 2011, पृ. 140